# भगवान श्रीकृष्ण और दानव शिशुपाल की कथा

## डीनीस थॉमस द्वारा गोल्डन टेल का परिचय

कई सिद्धयोगी उन नाटकों से परिचित हैं जिन्हें एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के बच्चे व किशोर कुछ दशकों से प्रस्तुत करते आए हैं। इन नवयुवकों ने भारत के सिद्धों व सन्तों की कहानियों का और साथ ही, भारत के दो महाकाव्यों : रामायण एवं महाभारत की कथाओं का अभिनय किया है।

मैं आपको बताना चाहूँगी कि इन नाटकों की शुरुआत कैसे हुई। सन् १९९८ में जब गुरुमाई जी ने नवयुवकों के एक समूह को श्री मुक्तानन्द आश्रम में पहली बार महाभारत की कथाओं को अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करते देखा, तब उन्होंने कहा, "यह कितना अद्भुत है — यह आश्रम का सबसे प्यारा राज़ है! तथापि, हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि आश्रम में हर कोई इन नाटकों का अनुभव कर सके और उन सिखावनियों को सीख सके जिन्हें बच्चे इतने जीवन्त, इतने मनोहारी रूप से चित्रित कर रहे हैं।"

इसलिए गुरुमाई जी ने निर्देश दिया कि मैं कुछ और नाटकों की रचना करूँ, क्योंकि मुझे रंगमञ्च से जुड़े काम का काफ़ी अनुभव है। मैंने बहुत उत्साह के साथ इस कार्य को स्वीकार किया। और उसी वर्ष, श्रीगुरुमाई ने इन सिद्धयोग नाटकों को नाम दिया : "द गोल्डन टेल्स।"

वर्ष १९९८ से २००२ के बीच, गर्मियों में, बच्चों व किशोरों ने श्री मुक्तानन्द आश्रम और गुरुदेव सिद्धपीठ में उनतालीस गोल्डन टेल्स का प्रदर्शन किया। मुझे उनमें से कई कथाओं का निर्देशन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

तब से ही, सिद्धयोग पथ का अनुसरण करने वाले कई बच्चे और परिवार, परिवारों के लिए सिद्धयोग रीट्रीट में नाटकों का प्रदर्शन करते आए हैं। परन्तु, जिन्हें हम "द गोल्डन टेल्स" के नाम से जानने लगे थे, उनका निर्माण वर्ष २००२ के बाद से नहीं हुआ था।

अब जल्दी से १७ साल आगे बढ़ जाते हैं। २१ अगस्त, २०१९ को भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिवस यानी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से दो दिन पहले, गोल्डन टेल्स की एक *नई* रचना को निर्देशित करते हुए मैं खुशी से फूली नहीं समा रही थी! यह नाटक महाभारत से, भगवान श्रीकृष्ण और दानव शिशुपाल की एक कथा पर आधारित था। बीस साल पहले सन् १९९९ में गुरुदेव सिद्धपीठ में एक गोल्डन टेल के रूप में इसी

कथा का पहली बार निर्माण किया गया था। और पता है क्या? सन् १९९९ में भी इसे जन्माष्टमी से दो दिन पहले ही प्रस्तुत किया गया था!

दरअसल, इस गोल्डन टेल और वर्षों पूर्व प्रस्तुत की गईं इसी तरह की कथाओं में कई समानताएँ थीं। उदाहरण के लिए, इस नाटक का निर्माण पहले की गोल्डन टेल्स की तरह ही मात्र चार दिनों में किया गया!

इस साल रविवार, १८ अगस्त को जब एक विज़िटिंग सेवाकर्ता ने श्री मुक्तानन्द आश्रम से जाते समय अपनी यह निराशा प्रकट की कि उन्हें गोल्डन टेल्स के प्रस्तुतिकरण से पहले ही आश्रम से जाना पड़ रहा है, तो गुरुमाई जी ने कहा, "महाभारत की इस विस्मयकारी कहानी को बच्चों ने जिस तरह प्रस्तुत किया है, यदि वीडिओ लेने वाले बच्चों की इस प्रस्तुति को कैमरे में अच्छी तरह से क़ैद कर पाए—याद रखना, मैंने कहा है, *यदि*—तो फिर सम्भवतः डीनीस इसे सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर पोस्ट करने के बारे में सोच सकती है।"

इसलिए, मुझे आपको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि *हाँ,* वीडिओ लेने वाले इस प्रस्तुति को कैमरे में अच्छी तरह से क़ैद कर पाए हैं! अब न केवल श्री मुक्तानन्द आश्रम में सभी लोग बल्कि सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् के सभी लोग भी यह जान पाएँगें कि सिद्धयोग पथ का अनुसरण कर रहे ये बच्चे और किशोर, शास्त्रों की अमूल्य और गूढ़ सिखावनियों को कितने अद्‌भुत तरीक़े से प्रस्तुत करते आ रहे हैं ।

यह एक परम्परा है, कि किसी गोल्डन टेल कि शुरुआत से पहले, द्वारपाल घोषणा करता है, "मेक वे, मेक वे [Make way, make way]!" यानी "रास्ता दो, रास्ता दो" ताकि युवा कलाकार हॉल में ऐसे प्रवेश कर सकें जैसे कोई शोभायात्रा निकल रही हो। इसलिए अब मैं आपसे कहती हूँ : मेक वे, मेक वे! भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए स्वयं को तैयार करें और उनकी सिखावनियों से अपने हृदय को शुद्ध होने दें।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।